पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

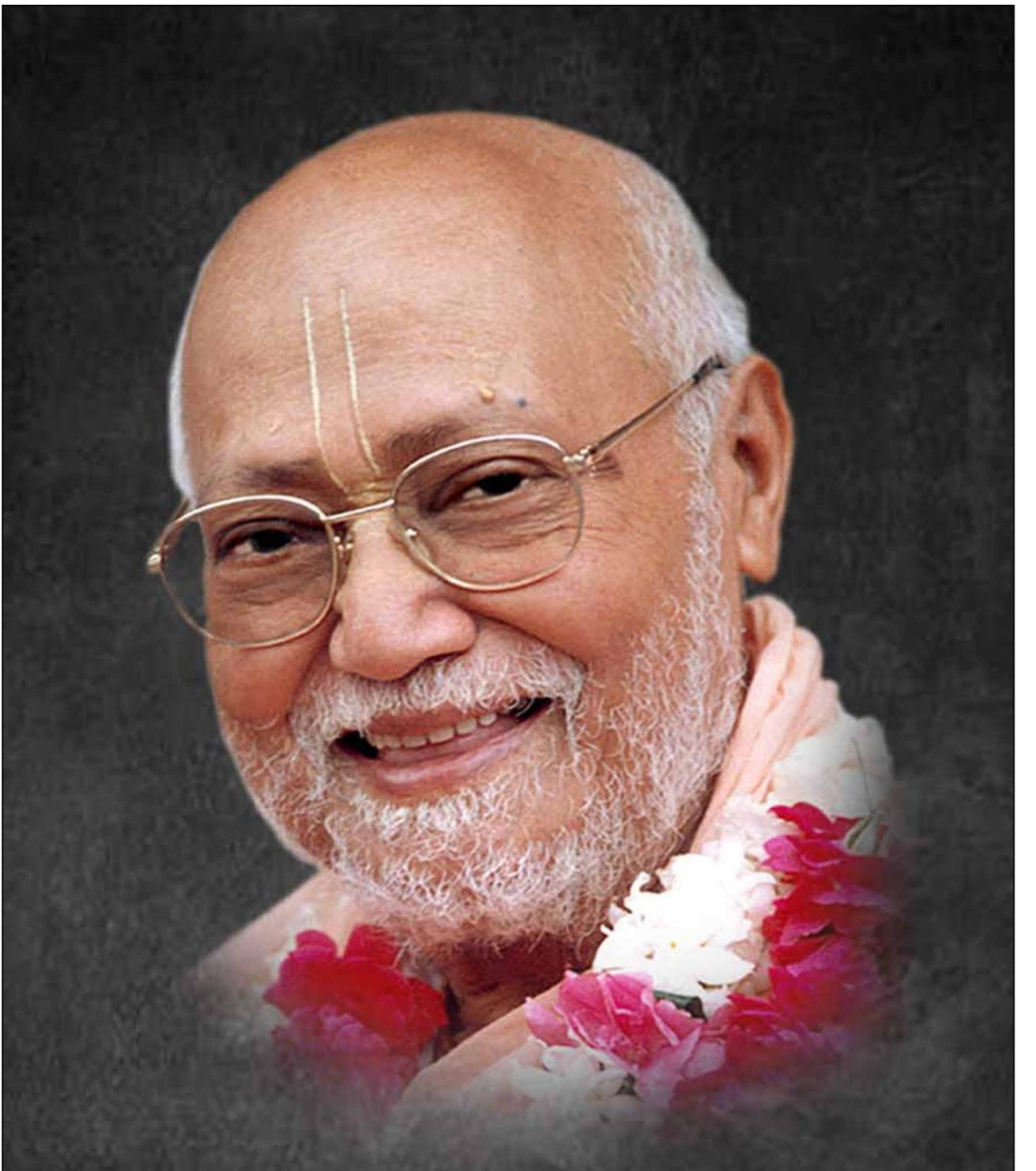

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

द्वितीय खण्ड

भाग – 61

14 अप्रैल 1970 मंगलवार से
18 अगस्त मंगलवार तक
बरसी पठाना (पटियाला) में
श्रील गुरुदेव

जालन्धर, लुधियाना चण्डीगढ़, दिल्ली जयपुर व वृन्दावन में एवं पुनः 17 नवम्बर 1970 मंगलवार से 10 दिसम्बर वृहस्पतिवार तक उत्तर प्रदेश में देहरादून, सहारनपुर और वृन्दावन में एवं नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली में श्रील गुरुदेव ने पार्षदों के साथ शुभागमन करके विपुल भाव से श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की वाणी का प्रचार किया। उस समय पूज्यपाद

ठाकुरदास ब्रह्मचारी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्तिवल्लभ तीर्थ महाराज, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रसाद पुरी महाराज, श्री अचिन्त्य गोबिन्द ब्रह्मचारी, श्री मदनगोपाल ब्रह्मचारी, श्रीपरेशानुभव ब्रह्मचारी और श्री यज्ञेश्वर ब्रह्मचारी आदि पंजाब प्रचार पार्टी में थे। उत्तर प्रदेश और दिल्ली की प्रचार-पार्टी में त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति ललित गिरि महाराज, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति वल्लभ तीर्थ महाराज, श्री ललित कृष्ण दास वनचारी, श्री मदनगोपाल ब्रह्मचारी, श्री परेशानुभव ब्रह्मचारी और श्री यज्ञेश्वर ब्रह्मचारी थे। पंजाब में प्रचार

के समय चण्डीगढ़, लुधियाना, खन्ना, राजपुरा आदि विभिन्न स्थानों से बहुत गृहस्थ-भक्त श्रील गुरुदेव के दर्शन और उनके श्रीमुख से श्रीहरि कथामृत पान करने आये थे। बस्सी पठाना व जालन्धर शहर में विराट नगर- संकीर्त्तन शोभा यात्रायें आयोजित की गईं । बस्सी पठाना में आई० टी० आई कालेज, जालन्धर में- माई हीरां गेट स्थित श्री सनातन धर्म मन्दिर में, लुधियाना में श्री ईलाइचिगिरी मन्दिर में, देहरादून में श्रीगीता भवन् में, सहारनपुर में नारायणपुरी में स्थित श्रीलक्ष्मी नारायण मन्दिर में, नई दिल्ली,

पहाड़गंज में तेल मण्डी स्थित श्री सूरज भान गोयल के घर में, वृन्दावन में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में और दिल्ली में माडल टाऊन स्थित श्रीसनातन धर्म मन्दिर में श्रीसाधुवैष्णव ठहरे थे। बस्सी पठाना के श्री मूलराज गुप्ता, जालन्धर शहर के श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, श्री राम भजन पाण्डे, श्री कृपाराम जी, श्री राज कुमार, श्री रमेश चन्द्र, श्री जवाहर लाल, श्री विलायती राम, श्री रामजी दास, श्री ओम प्रकाश और श्री श्याम लाल, लुधियाना के श्री नरेन्द्र नाथ कपूर और श्री कृष्ण लाल बजाज, देहरादून के श्री राम

चन्द्र चौबे, श्री प्रेम दास जी, श्री तुलसी दास जी, श्री नन्दनन्दन दासाधिकारी और श्री मान प्रकाश शर्मा, सहारनपुर के एडवोकेट, श्री इन्द्र सेन गुप्ता, श्री भूषण लाल जी और श्री शील चन्द्र जी और दिल्ली के श्री प्रह्लाद राय गोयल चैतन्य-वाणी के प्रचार में आर्थिक सहयोग प्रदान कर श्रीगुरुदेव के प्रचुर कृपा-भाजन हुये। श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु जी के आविर्भाव के उपलक्ष्य में जालन्धर में निखिल पंजाब महा-धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें अमृतसर, होशियारपुर, लुधियाना, गुरदासपुर, राजपुरा,

खन्ना, अलावलपुर, तलवाड़ा, ऊना, चण्डीगढ़ आदि पंजाब के विभिन्न स्थानों से एवं हरियाणा, दिल्ली से भी बहुत सी संकीर्त्तन-पार्टियों ने एवं भारी संख्या में श्रद्धालु भक्तों ने योगदान दिया था। जालन्धर में इस धर्म-सम्मेलन के अतिरिक्त इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट के एग्जीक्यूटिव आफिसर श्री डी० पी० शर्मा जी के वास स्थान पर भी श्रील गुरु देव जी ने 'ईश्वर विश्वास और धर्म मानने की आवश्यकता के सम्बन्ध में अकाट्य शास्त्र - युक्तियों द्वारा अत्यन्त सार-गर्भित भाषण दिया था। श्री जगत् नारायण, एम० पी०, श्री केवल कृष्ण

सहगल, श्री सतप्रकाश कालिया, अमित चन्द भोलानाथ के मालिक श्री राजेन्द्र कुमार इत्यादि बहुत से विशिष्ट-विशिष्ट नागरिक इस सभा में उपस्थित थे।

लुधियाना में सिविल लाईन स्थित श्री दण्डि स्वामी जी के आश्रम में असंख्य नर-नारियों की सभा में श्रील गुरु देव जी के श्रीमुख से निकली वाणी ने सभी को विशेष रूप से प्रभावित किया था । 2 मई 1970, शनिवार के दिन श्रील गुरुदेव पार्टी के साथ बस द्वारा लुधियाना से चण्डीगढ़ पहुँचे और 15 दिन तक 23 सैक्टर में स्थित श्रीसनातन धर्म

मन्दिर में रह कर प्रतिदिन सुबह और रात्रि के समय धर्म सभायें करते थे। इसके अतिरिक्त एडवोकेट, श्री शम्भु लाल पुरी, श्री एस० एल० खन्ना एवं श्रीसतपाल भादेरा इत्यादि के निवास स्थानों पर विशेषविशेष व्यक्तियों की उपस्थिति में तीन सभायें हुई थीं। पंजाब के पूर्व मुख्य मन्त्री और आन्ध्रप्रदेश के पूर्व गवर्नर श्री भीमसेन सच्चर ने अपनी पत्नी के साथ सभा में आकर श्रील गुरुदेव जी के श्रीमुख से निःसृत वाणी श्रवण की थी। उस समय श्रील गुरुदेव अधिक दिन चण्डीगढ़ में रहे थे और तभी उन्होंने सैक्टर 20-बी में मिली

ज़मीन पर श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रकट करने की घोषणा की थी और 15 जुलाई दोपहर के समय वैष्णवहोम एवं नाम संकीर्त्तन के द्वारा श्रीमन्दिर, संकीर्त्तन-भवन और साधु - निवास की नींव रखने का कार्य सम्पन्न किया था। स्थानीय अंग्रेज़ी समाचार पत्र 'The Tribune' में इस कार्यक्रम की खबर छपी थी।

7 अगस्त को श्रील गुरुदेव जी चण्डीगढ़ से दिल्ली में श्रीप्रह्लाद राय गोयल के निवास पर पहुँचे। एक रात्रि वहाँ रहकर अगले दिन जयपुर पहुँचे। वहाँ एक धनाढ्य सज्जन, श्री जगदीश प्रसाद जी के घर में 4 दिन

रह कर शहर के विभिन्न स्थानों पर हरि कथा का प्रचार किया था। 13 अगस्त को श्रीधाम वृन्दावन में पहुँच कर श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ की झूलनयात्रा - उत्सव में भी उन्होंने योगदान दिया था। श्रीधाम वृन्दावन से लगभग साढ़े चार दिन के बाद श्रील गुरु महाराज जी 20 अगस्त की रात को सपार्षद कोलकाता वापस पहुँचे।

दूसरी बार कोलकाता में दामोदर व्रत का पालन करने के पश्चात् शीतकाल में उत्तर प्रदेश में भ्रमण करते समय श्रील गुरुदेव जी ने देहरादून आदि स्थानों पर

शुभपदार्पण किया था । देहरादून में प्रत्येक सुबह श्रीगीता भवन में एवं रात्रि को राजपुरा रोड़ पर स्थित दिलाराम बाज़ार मन्दिर में धर्म-सम्मेलन का आयोजन किया गया था। देहरादून से 20 मील दूर विकास नगर में श्रीसनातन धर्म संघ संकीर्त्तन सभा में भी श्रील गुरुदेव जी ने भाषण दिया था। सहारनपुर में स्थानीय जज, सब-जज, मैजिस्ट्रेट, एडवोकेट इत्यादि विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति में श्रील गुरुदेव जी ने 'God and Soul' के सम्बन्ध में भाषण दिया था। भाषण अंग्रेज़ी में होने के कारण उन सब के लिये

समझना आसान था। दिल्ली माडल टाऊन में श्रीसनातन धर्म मन्दिर में प्रत्येक सुबह और रात्रि को विशेष धर्म सम्मेलन एवं करोल बाग में स्थित श्री हीरालाल जी के घर पर बहुत से विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति में श्रील गुरुदेव जी ने भाषण प्रदान किया था। श्रील गुरुदेव की अध्यक्षता में कोलकाता में 35, सतीश मुखर्जी रोड पर स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में 11 अक्तूबर, रविवार से 9 नवम्बर, सोमवार तक श्रीदामोदर-व्रत, नियम सेवा पालन की गयी थी। श्री उत्थान एकादशी तिथि को श्रील गुरुदेव जी के

शुभाविर्भाव के उपलक्ष्य में विशेष रूप से श्रीव्यास पूजा का अनुष्ठान किया गया। इस महान अनुष्ठान में श्रील गुरुदेव जी के गुरु-भाइयों में से जो वहाँ उपस्थित थे, वे थे - पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद भक्ति प्रमोद पुरी महाराज, पूज्यपाद त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विलास भारती महाराज, श्रीमद् जगमोहन ब्रह्मचारी, श्रीमद् कृष्णानन्द भक्तिशास्त्री प्रभु, श्रीमन् नवीन कृष्ण बाबा जी महाराज और श्रीमद् ठाकुर दास ब्रह्मचारी प्रभु । उत्थान एकादशी तिथि के दिन श्रीमठ की सन्ध्या-कालीन धर्म सभा के विशेष

अधिवेशन में श्रील गुरुदेव जी ने जो अभिभाषण दिया था उसका सार नीचे दिया जा रहा है :-

आज मेरे परमगुरुदेव श्रील गौरकिशोर दास बाबा जी महाराज जी की तिरोभाव तिथि है। वैष्णवों की आविर्भाव और तिरोभाव तिथि को मंगलेच्छुक व्यक्ति उनकी महिमा को स्मरण करते हुए पालन करते हैं।

बाबा जी महाराज फरीदपुर जिले के टेपाखोला नामक गाँव के पास पद्मावती नदी के किनारे 'वागयान' नामक गाँव में प्रकट हुए थे। जीवन के प्रथम भाग में उन्होंने भले

ही गृहस्थ धर्म अंगीकार किया था परन्तु बाद में बाबा जी महाराज जी ने अपना घर-बार त्यागकर बड़े कठोर वैराग्य के साथ निरन्तर हरिभजन का आदर्श दिखाया। वैसे तो बाबा जी महाराज जी ने बाहरी व्यवहार से अनपढ़ की लीला का अभिनय किया परन्तु श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी उन्हें श्रीमद्भागवत का मूर्तिमान स्वरूप मानते थे। मेरे गुरुदेव श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी दुनियावी परिचय के अनुसार एक सम्भ्रान्त कुल में उत्पन्न विद्वान्, आजानुलम्बित बाहु

वाले सुपुरुष तथा अनेक गुणों से विभूषित थे। इतना होने पर भी उन्होंने बार-बार बाबाजी महाराज जी के पास जा जाकर उनकी कृपा की भिक्षा माँगने की लीला का प्रदर्शन किया। शायद बारह बार खाली हाथ लौटने पर भी प्रभुपाद जी ने पुनः बड़े आर्त भाव से उनसे मन्त्र-दीक्षा प्रदान करने के लिए प्रार्थना की तो बाबा जी महाराज जी ने एक दिन कहा, "मैं थोड़ा महाप्रभु जी को पूछकर देखूँ, उनकी हाँ होने से मैं मन्त्र दूँगा।"

कुछ दिनों के बाद प्रभुपाद जी ने फिर प्रार्थना की तो उन्होंने कहा,

"मैं महाप्रभु जी को पूछना भूल गया।"

इस घटना से भी प्रभुपाद जी का उत्साह गिरा नहीं और वे पुनः एक दिन बाबाजी महाराज जी के पास आये और पूछने लगे तो बाबाजी महाराज जी ने कहा, "मैंने महाप्रभु जी को पूछा था। उन्होंने कहा कि आप जैसा ऐश्वर्यशाली सुनीति-परायण विद्वान् मेरे जैसे कंगाल के निकट दीक्षा ग्रहण करने के योग्य नहीं है।"

इन कठोर वाक्यों को सुनकर भी मेरे गुरुदेव घबराये नहीं और थोड़ा अभिमान भरे वाक्यों का प्रयोग

करते हुए कहने लगे, “आप कपट-चूड़ामणि श्रीकृष्ण का भजन करते हैं, क्या इसलिए आप मेरे साथ भी ये छल कर रहे हैं? आपके श्रीपादपद्मों की कृपा न प्राप्त कर पाने पर मैं इस जीवन को ही नहीं रखूँगा।”

प्रभुपाद जी ने जब ये वाक्य कहे तो पहले थोड़ी देर तो बाबा जी महाराज चुप रहे परन्तु कुछ समय बाद स्वयं बाबाजी महाराज जी ने स्नेह से तर-बतर हृदय से प्रभुपाद जी को आशीर्वाद दिया। बावाजी से महाराज ने स्वयं अपने चरणों की धूलि का प्रभुपाद जी के मस्तक आदि सभी अंगों पर लेपन करते हुए

व आशीर्वाद देते हुए कहा, - "वास्तव में तुम ही योग्य पात्र हो, जाओ! पृथ्वी में चारों ओर श्रीमन् महाप्रभु जी की वाणी का प्रचार करो।"

मेरे गुरुदेव बाबाजी महाराज जी के एक मात्र दीक्षित शिष्य थे। श्रीगुरुदेव जी की मनोऽभीष्ट सेवा के लिए बाद में श्रील प्रभुपाद जी ने श्रीमायापुर में 'श्रीचैतन्य मठ' और विभिन्न स्थानों पर प्रायः 64 और प्रचार केन्द्रों की स्थापना की तथा अपने योग्य योग्य सेवकों को पृथ्वी के विभिन्न भागों में भेजकर श्रीमन् महाप्रभु जी की वाणी का बड़े विपुल भाव से प्रचार किया।

बाबाजी महाराज गंगा के किनारे एक टूटी-फूटी नाव (जो कि किसी ने फेंक दी थी) में झौंपड़ीनुमा छज्जे के नीचे रहते थे। खाने-पीने में वे कभी गंगा जी की मिट्टी खा लेते तो कभी गंगा जल का पान कर लेते । कभी-कभी वे माधुकरी में जाते तो भिक्षा में मिले पके हुए चावलों को गंगा जी में धोकर उसमें से दो-एक मुट्ठी चावल खा लेते। कभी-कभी तो वे कच्चा अनाज ही चबा लेते तो कभी दो-तीन दिन भूखे रह जाते । इस प्रकार वे कठोरता के साथ जीवन धारण करते हुए निरन्तर हरिनाम करते रहते थे। थोड़े दिनों में

ही उनका यश चारों ओर फैल गया। अनगिनत लोग उनके दर्शनों को आने लगे । एक दिन बहिर्मुख लोगों के हल्ले-गुल्ले से परेशान होकर वे नवद्वीप शहर के किसी व्यक्ति के शौचालय में घुस गये और वहीं रहने की अद्भुत लीला करने लगे। लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा है? वे इसे बाबा जी महाराज जी का एक तरह का पागलपन समझ रहे थे । घर का मालिक बाबा जी महाराज की इस अद्भुत लीला को देख हैरान-सा रह गया और भयभीत भी हो गया। तभी उसने बड़ी फुर्ती के साथ तुरन्त पूरे शौचालय को गोबर

से लीप डाला तथा मित्री को बुलवाकर चूने से पुताई करवा दी।

काशीम बाज़ार के महाराज सर मणीन्द्र चन्द्र नन्दी बहादुर भी एक बार आपकी कृपा लेने के लिए आपके पास आये और बार-बार आपसे अपने घर चलने का अनुरोध करने लगे। परन्तु आप किसी भी प्रकार से उनके साथ जाने को राजी नहीं हुए और कहने लगे- "मैं यदि आपके घर जाऊँ तो आपके राज-ऐश्वर्य को देखकर मुझे लोभ होगा, इससे न तो आपका और न मेरा ही हित होगा। बल्कि आप घर-बार छोड़कर यहाँ आ जाइये। मैं आपके

लिए एक छज्जा बना दूँगा, उसमें रहकर आप भजन करना तथा जीवन धारण करने के लिए जिन-जिन भी भोज्य द्रव्यों की आवश्यकता होगी, वह भी मैं लाकर दूँगा; उसके लिए भी आपको चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है।

इस प्रकार जब चारों ओर बाबाजी महाराज जी का यश फैलने लगा तो ये देखकर किसी-किसी के मन में बाबाजी महाराज जी के प्रति ईर्ष्या होने लगी। वे बाबाजी महाराज जी को बदनाम करवाने के लिए उनमें दोष ढूँढने लगे। कोई-कोई तो ये देखने के लिए कि रात में बाबाजी

महाराज क्या करते हैं, चुपके-चुपके रात-रात भर उनके आसपास मण्डराने लगे। एक रात उन्होंने बाबाजी महाराज जी की नाव के छज्जे के नीचे से दो व्यक्तियों की बातचीत की आवाज़ सुनी। मौका देखकर उन्होंने ये बात कृष्ण नगर के पुलिस इन्स्पेक्टर को बतायी तो बाबाजी महाराज जी को गिरफ्तार करने की भावना से उक्त पुलिस इन्स्पेक्टर भी एक बार देर रात दबे-पाँव बाबाजी महाराज जी की टूटी नाव में छज्जे रूपी कुटिया पर आया । उसने अपने कानों से गुदड़ी से ढकी कुटिया के अन्दर हो रही

बातचीत को सुना। बातचीत को सुनकर साफ-साफ मालूम पड़ता था कि एक आवाज़ तो बाबाजी की है जबकि दूसरी आवाज़ किसी स्त्री की है। इन्स्पेक्टर का सन्देह विश्वास में बदल गया । तभी उसने झटके से गुदड़ी को उठाया और कुटिया के अन्दर टार्च मारी तो देखा कि बाबाजी महाराज अकेले वहाँ बैठे-बैठे मुस्करा रहे हैं और कोई भी वहाँ नहीं है।

इस घटना से इंस्पेक्टर समझ गया कि बाबा जी महाराज कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं तथा उसे इस बात का अहसास व पश्चाताप

हुआ कि उसने बाबाजी महाराज जी को गलत समझा। इस घटना से वह भयभीत हो गया कि उसका यह अपराध हुआ है और अनुतप्त हृदय से बाबाजी महाराज के चरणों में लोटकर अपने किये की क्षमा माँगने लगा।

श्रीराधागोविन्द जी की अन्तरंग प्रेम-सेवा में निमग्न श्रीबाबाजी महाराज जी का अप्राकृत दिव्य भाव तो मनीषीगणों के लिए भी सुदुर्ज्ञेय है। अब भला ये सब दिव्य भाव साधारण बहिर्मुख मनुष्य न समझ पायें, इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

आज इस शुभ तिथि में मैं, उनका दासानुदास, श्रील बाबाजी महाराज जी के श्रीचरणों में प्रणत होकर एवं उनके प्रियतमजन श्रील प्रभुपाद जी के श्रीपादपद्मों में प्रणत होकर उनकी कृपा प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने श्रीपादपद्मों की सेवा में तथा अपने आराध्य श्रीगौर सुन्दर जी एवं श्रीराधागोविन्द जी की प्रेम-सेवा में हमें नियुक्त करें-

"आधारोऽप्यपराधानामविवेक
हतोऽप्यहम्। त्वतकारुण्य
प्रतीक्ष्योऽस्मि प्रसीद मयि
माधव॥"

आज़ मेरे परम गुरुदेव श्रील गौर किशोर दास बाबाजी महाराज जी की तिरोभाव तिथि है। दैवयोग से इसी उत्थान एकादशी तिथि में मेरा जन्म हुआ था। ऐसी प्रथा प्रचलित है कि जन्म दिन पर सभी आकर आशीर्वाद देते हैं । इसलिये आप सभी ने भी यहाँ आकर मुझे आशीर्वाद दिया है। उपवास के दिन इतनी देर तक कष्ट सहन करके जिन्होंने मेरे मस्तक पर आशीर्वादों की वर्षा की है, वे निश्चय ही परम दयालु हैं । वैष्णवों के 26 गुणों में से पहला गुण है कृपालु, दूसरा है

कृतद्रोह, फिर है और भी दो गुण हैं- सर्वोपकारक और कृष्णैकशरण।

“कृपालु, अकृतद्रोह, सत्यसार सम।
निर्दोष, वदान्य, मृदु, शुचि, अकिंचन॥
सर्वोपकारक, शान्त, कृष्णैकशरण।
अकाम, निरीह, स्थिर, विजित षड़गुण॥
मितभुक, अप्रमत्त, मानद, अमानी।
गम्भीर, करुण, मैत्र, कवि, दक्ष, मौनी॥ "

चै० च० म० 22/74-76

आज मेरे जन्मदिन पर जिन्होंने जो सब आशीर्वाद सूचक बातें कहीं हैं वह तो उनके ही योग्य हैं, क्योंकि उन्होंने तो अपने हृदय की बातें कही हैं जिससे उनकी ही महिमा प्रकाशित हुई है। मेरा निवेदन है कि जिन्होंने ये आशीर्वाद बरसाये हैं, उससे यदि वे मेरे चित्त को श्रीकृष्ण में नहीं लगा

पाये व मुझसे अपने आराध्य की सेवा नहीं करवा पाये तो मैं उसे व्यर्थ ही समझूँगा।

क्या मैं एक पशु हूँ? यह बात मैं क्यों कह रहा हूँ क्योंकि सभी महिमा वर्णन कर रहे हैं और मैं

चुपचाप बैठे स्वयं की स्तव-स्तुति सुन रहा हूँ। दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनना साधुओं के लिये उचित नहीं है। ऐसा करना अन्याय है, यह मैं जानता हूँ; परन्तु शिष्य का करणीय धर्म है- गुरुपूजा, इससे यदि मैं उनको रोकने जाऊँ तो ये भी उनके लिये पारमार्थिक रूप से अकल्याणकारी होगा। इसी आशंका से इसका विरोध करना मैंने ठीक नहीं समझा। बाहरी रूप से चाहे ये स्वयं को शिष्य मानते हों परन्तु मैं इन्हें अपना पारमार्थिक हितसाधनकारी बान्धव समझता हूँ। यह जानते हैं कि मैं अकेला

हरिभजन नहीं कर पाऊँगा, जिस कारण श्रीभगवान् द्वारा प्रेरित होकर यह लोग मुझ पर कृपा करने के लिये यहाँ आये हैं

'एकाकी आमार नाहि पाय बल,
हरिनाम संकीर्त्तने ॥'

(शरणागति)

परम करुणामय श्रीगुरुदेव जी ने मुझे अयोग्य समझकर अपनी अभीष्ट-सेवा-सम्पादन में सहायता के लिये मेरे पास बहुत से व्यक्तियों -से को भेज दिया है। पग-पग पर मैं उनकी करुणा की उपलब्धि कर रहा हूँ । श्रीगुरुदेव जी के अन्तर्धान के आठ साल बाद एक बार मेरे किसी

बड़े गुरु भाई ने दीक्षा देने की प्रेरणा देते हुए मुझे कहा- “यदि आप दीक्षा नहीं दोगे तो क्या महीने-महीने पैसे लेने वाले पुजारी से पूजा करवाओगे ? ” तभी मुझे आसाम प्रदेश में सरभोग स्थित श्रीगौड़ीय मठ में श्रील गुरुदेव जी के साक्षात् निर्देश की बात याद आ गई। उन्होंने मुझे कहा था, "तुम्हारी गुरुसेबा सारी-की-सारी तुम्हारी ही है। यदि कोई दूसरा कुछ कर दे तो उसके लिये तुम कृतज्ञ रहना। श्रीकृष्ण के संसार की majoredomo (बड़े परिवार की सर्वप्रधान गृहिणी) हैंश्रीमती राधारानी। वह जानती हैं कि श्रीकृष्ण

की समस्त सेवाएँ उनकी ही करणीय हैं, दूसरा कोई कैसी भी सेवा कर दे, वह कृतार्थ हो जाती हैं, उसकी कृतज्ञ रहती हैं।" श्रील गुरुदेव जी के उक्त निर्देश की बात याद आने पर तथा अपने बड़े गुरु भाई की प्रेरणा से मुझे समझ में आ गया और मैंने सन् 1944 से किसी-किसी को हरिनाम-मन्त्रादि देना आरम्भ कर दिया । यद्यपि इससे पहले बहुत से लोगों ने मुझे कहा था कि उन्होंने मुझे स्वप्न में देखा तथा स्वप्न में ही मैंने उन्हें मन्त्र भी दिया, इसलिए व्यवहारिक रूप से भी मैं उन्हें

हरिनाम - भन्त्रादि दूँ। किन्तु तब मैंने किसी को भी मन्त्र नहीं दिया।

अनेक प्रकार की मुसीबतों के समय में भी श्रील प्रभुपाद जी लोगों को भेज रहे हैं, पदार्थ भेज रहे हैं- यह देखकर मैं उत्साह का अनुभव कर रहा हूँ। जिनको उन्होंने भेजा है, उनके प्रति भी मेरा निवेदन है कि वे श्रीराधागोविन्द जी के द्वारा, श्रीमन्महाप्रभु जी के द्वारा भेजे गये हैं, इसलिये वे ऐसा प्रयास करें कि जैसे वे अपने धर्मपथ से न डिगें। वे स्वयं अच्छा आचरण करते हुये मुझे भी श्रीहरि गुरु वैष्णव की सेवा में नियोजित रखें तथा दृढ़चित्त होकर

श्रील प्रभुपाद जी की मनोऽभीष्ट व श्रीमन्महाप्रभु जी की मनोऽभीष्ट सेवा करे। उस मनोऽभीष्ट सेवा में उनका आत्मनिवेदन ही मैं अपने प्रति वास्तविक स्नेह का उदाहरण समझूँगा। हमारे एक गुरुभाई हैं, जिनकी योग्यता का प्रकाश पहले नहीं देखा गया। परन्तु अभी अमेरिका में प्रचार करके उन्होंने बहुत से - व्यक्तियों को गौरविहित भक्ति-धर्म में आकर्षित किया है। यह सब श्रील प्रभुपाद जी की इच्छा से ही सम्भव हुआ है। श्रील प्रभुपाद जी की इच्छा थी कि पृथ्वी के कोने-कोने में श्रीमन् महाप्रभु जी के विमल-

प्रेमधर्म की वाणी प्रचारित हो । इसलिये उन्होंने अपने प्रकटकाल में ही विदेश में प्रचार के लिये सबसे पहले श्रीपाद भक्ति हृदय बन महाराज जी, श्रीसम्विदानन्द दास तथा मेरे नाम से Passport बनवाया था। उनमें मैं उम्र में सबसे छोटा था। जब श्री शरदिन्दुनारायण राय प्राज्ञ महोदय ने युवकों को विदेश भेजना ठीक न होगा- ऐसी आपत्ति ज़ाहिर की तो मेरे बदले ज्यादा उम्र के श्रीपाद भक्तिप्रदीप तीर्थ महाराज जी का नाम प्रस्तावित हुआ और बाद में उन्होंने ही विदेश में प्रचार के लिये प्रस्थान किया। श्रील प्रभुपाद जी की

इच्छा से ही सब कुछ हो रहा है, यह मैंने अनेक घटनाओं के द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव किया है। श्रील प्रभुपाद जी ने वृन्दावन में राधानिवास के जिस निर्दिष्ट स्थान पर मठ स्थापन की इच्छा प्रकाशित की थी, उनके रहते वह ज़मीन लेना सम्भव न हो पाया, किन्तु बाद में श्रील प्रभुपाद जी की इच्छाशक्ति के प्रभाव से, दैवयोग से मुझे निमित्त बनाकर ही वह ज़मीन हमें प्राप्त हुई तथा वहाँ कोलकाता मठ से भी बड़ा मठ प्रकाशित हुआ है।

मैं यहाँ सामने उपस्थित सबके पास कृतज्ञ हूँ। अब बुढ़ापा-सा आ

जाने से मेरा दुनियाँ से चले जाने का समय आ गया है । आप आशीर्वाद करना जैसे मैं दम्भ को त्यागकर जीवन का शेष बचा हुआ समय श्रीहरि-गुरुवैष्णव की सेवा में नियोजित कर पाऊँ ।

सन् 1971 से सन् 1974 तक परमाराध्य श्रील गुरुदेव जी ने अपने पार्षदों के साथ भारत के विभिन्न स्थानों में भ्रमण करते हुये श्रीचैतन्य महाप्रभु जी की आचरित एवं प्रचारित प्रेमधर्म की वाणी के प्रचार के लिए जिस प्रकार अनथक परिश्रम किया, उसे निश्चित रूप से असाधारण ही कहना होगा । सन्

1971 से सन् 1974 तक के प्रचार कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :

2 अप्रैल 1971 शुक्रवार शुक्ला सप्तमी तिथि को चण्डीगढ़ मठ का विग्रह-प्रतिष्ठा महोत्सव-अनुष्ठान।

8 अप्रैल से 11 अप्रैल - बस्सी पठाना (पंजाब) में हरिनाम - संकीर्त्तन-सम्मेलन।

21 अप्रैल से 27 अप्रैल- जालन्धर के आदर्श नगर में स्थित लाला श्री हिन्दपाल जी के निवास स्थान पर प्रचार कार्यक्रम

11 सितम्बर से 15 सितम्बर - मण्डी गोविन्दगढ़ (पंजाब) में धर्ममहासम्मेलन।

15 मार्च 1972 बुधवार से 21 मार्च मंगलवार - चण्डीगढ़ मठ का वार्षिक अनुष्ठान।

27 मार्च वृहस्पतिवार से 3 अप्रैल सोमवार तक - जालन्धर (पंजाब) शहर के प्रताप बाग की सभा मण्डप में और श्री हिन्दपाल जी के घर पर धर्म-सम्मेलन अनुष्ठान।

4 अप्रैल से 8 अप्रैल - लुधियाना में धर्म-सम्मेलन

10 अप्रैल 1973 सोमवार से 16 अप्रैल रविवार - मुज्जफरनगर में न्यू मण्डी स्थित कीर्त्तन भवन में और गान्धी कालौनी में स्थित श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर में धर्म सम्मेलन।

17 अप्रैल से 19 अप्रैल-न्यू दिल्ली में श्री सूरजभान पत्थर वाले के घर में एवं दिल्ली में माडल टाऊन में स्थित श्री प्रह्लाद राय जी के निवास भवन में श्रीहरिनाम संकीर्त्तन व श्रीहरिकथा का आयोजन।

22 अक्तूबर रविवार से 21 नवम्बर मंगलवार - एक महीने तक

चलने वाले दामोदर व्रत का पालन तथा श्रीब्रजमण्डल परिक्रमा का अनुष्ठान।

10 फरवरी से 12 फरवरी, 1973 - ग्वालपाड़ा (आसाम) में वार्षिक धर्म-सम्मेलन, 14 फरवरी से 18 फरवरी तक गोहाटी में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के विजय-विग्रह-प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में धर्मसम्मेलन।

22 फरवरी वृहस्पतिवार से 25 फरवरी रविवार-कोलकाता के श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में एवं कोलकाता कालेज स्कवायर में स्थित विश्वविद्यालय के हाल में श्रील

सरस्वती गोस्वामी ठाकुर जी की शतवार्षिकी का अनुष्ठान

21 मार्च को श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती शतवार्षिकी समिति के उद्यम से नवद्वीप के तेघरी मोहल्ले में स्थित श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ एवं 22 मार्च वृहस्पतिवार को श्रीगोविन्द जी के मन्दिर में अनुष्ठान हुआ।

श्रीलगुरुदेव